12. दादी जी के महावाक्य

बाबा ने हमको देना सिखाया है, लेना नहीं सिखाया है। लेना बाप से है, शांति बाप से लो लेकिन दूसरों को दो। दूसरे से लेना हो तो उनमें जो अच्छाई है वो लो। फिर दूसरे से जो कर्मों का खाता बनता है, वह नहीं बनेगा। नहीं तो उल्टा कर्मों का खाता बनेगा। फिर कभी बहुत मौज रहेगी, ख़ुशी रहेगी, कभी थोड़े में ख़ुश हो जायेंगे, कभी थोड़े में दुःखी हो जायेंगे, तो ख़ुशी हमारी प्रापर्टी हुई क्या?

यदि आप किसी कारण से अपनी ख़ुशी गँवाते हैं तो यह मिलियन डॉलर गँवाते हैं। दुनिया में तो कई बातें आयेंगी, जायेंगी। यह सब होना ही है लेकिन हमें राजयोग सीखकर जीवन में बैलेन्स लाना है।

कर्म भी करो तो उसके फल की जास्ती इच्छा नहीं रखो। करते चलो, करते चलो। दूसरों को भी मौज देते चलो, ख़ुशी देते चलो। तो आप भी मौज में रहेंगे। ख़ुशी देना कोई डॉलर खर्च करना नहीं है। लेकिन ख़ुशी पैसे, डॉलर, रुपयों से बहुत बड़ा अमूल्य रत्न है। बाबा ने हमें ख़ुशी दी है।

जिसके पास थोड़ा भी इगो रहता, वह न खुद ख़ुश रहता है, न दूसरों को ख़ुश करता है। वो सदैव नाख़ुश रहेगा। किसी न किसी बात में डिस्टर्ब होता रहेगा। इगो से ख़ुशी खत्म हो जाती है। तो यह राजयोग हमें बहुत बड़ी सूक्ष्म ख़ुशी देता है। हम सिर्फ हेपी नहीं, वेरी–वेरी हेपी हैं। ये है ज्ञान–योग का फल।

हर एक ऐसे समझो कि मैं आकाश में उड़ रहा हूँ/ उड़ रही हूँ। इतनी ख़ुशी में रहो। क्यों? कौन मिला है हमें! यह तो हमारे पास ज्ञान है। बाबा कहते मैं तुम्हें डबल वर्सा देने आता हूँः ब्रह्मांड और विश्व दोनों का। और हमें क्या चाहिए! कुछ नहीं। अगर थोड़ी भी किसी प्रकार की इच्छा होगी तो वह ख़ुशी गायब करेगी।

ओम् शांति।